

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आईने में सत्यजित राय की फ़िल्में

विकास कुमार

शोधार्थी (सिनेमा अध्येता)

कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी

नदिया, पश्चिम बंगाल- 741235

Email: rahivikas1556@gmail.com

शोध-सार

भारतीय सिनेमा में सत्यजित राय को एक महान निर्देशक के रूप में जाना जाता है। उनकी फ़िल्मों के विषय में जितनी बात की जाए, वह कम पड़ जाती है। चाहे फ़िल्मों का कथानक हो, पटकथा की बुनावट हो, अभिनय की सूक्ष्मता और चारित्रिक गठन हो, साहित्यिक रूपांतरण हो या फिर ध्वनि-संगीत के संयोजन की बात हो, वे सब में सिद्धहस्त रहे हैं। यही कारण है कि कोई सिनेमा अध्येता या सिनेमा अध्ययन से जुड़ा व्यक्ति उनके फ़िल्मों पर बात किए बग़ैर नहीं रह सकता है। आज हम उनके उत्कृष्ट सिनेमाई कृतियों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और संगीतकार पर बात करेंगे जोकि एक अनछुआ विषय है। चूँकि सत्यजित राय ने अपने फ़िल्मी करियर की शुरुआत ही विविध शास्त्रीय गायकों और वादकों के संगीत के प्रयोग से किया। उनकी फ़िल्मों में संगीत जहाँ एक ओर महान सितार वादक पंडित रविशंकर ने दिया, तो वहीं दूसरी ओर सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ ने दिया। इसके साथ ही साथ सरोद वादक और मैहर घराने से तल्लुक रखने वाले शास्त्रीय संगीतज्ञ अली अकबर खान ने भी अपने संगीत से राय की फ़िल्मों को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इन लोगों ने राय की शुरुआती दौर की प्रमुख फ़िल्मों- 'पाथेर पांचाली', 'अपरजितो', 'अपुर संसार', 'पारस पत्थर', तथा 'जलसा घर' आदि में शास्त्रीय संगीत की विविध राग-रागिनियों के प्रयोग से भारतीय दर्शक से लेकर पश्चिम के दर्शक तक को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से रूबरू कराया। इस आलेख में हम विस्तृत तौर पर सत्यजित राय के फ़िल्मों में शास्त्रीय गायकों और उनके वाद्ययंत्रों व फ़िल्मी प्रयोग पर चर्चा करेंगे।

बीज शब्द : सिनेमा, शास्त्रीय संगीत, राग-रागिनी, वाद्ययंत्र, पार्श्वसंगीत, मूक सिनेमा, सवाक् सिनेमा, इप्ता, बंदिश, संगीतवादक.

मूल आलेख : सत्यजित राय एक ऐसे महान निर्देशक थे कि उनकी फ़िल्मों के विषय में जितनी बात की जाए, वह कम है। चाहे फ़िल्मों का कथानक हो, पटकथा की बुनावट हो, अभिनय की सूक्ष्मता और चारित्रिक गठन हो, साहित्यिक रूपांतरण हो या फिर ध्वनि-संगीत के संयोजन की बात हो, वे सब में सिद्धहस्त थे। सिनेमा के प्रत्येक विधा पर उनका एकल अधिकार था। यही कारण है कि कोई सिनेमा अध्येता या सिनेमा अध्ययन से जुड़ा व्यक्ति उनकी फ़िल्मों पर बात किए बग़ैर नहीं रह सकता है। राय की फ़िल्मों ने फ़िल्म अध्ययन के क्षेत्र में विचार-विर्मश को एक नई दिशा दी है। उनकी सिनेमाई कृतियों पर अनेक शोध, पुस्तकें, पाठ्य-समाग्री और आलेख आए दिन नजर

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

आते हैं. आज हम उनकी उत्कृष्ट सिनेमाई कृतियों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और संगीतकार पर बात करेंगे. स्वयं सत्यजित राय का सिनेमा में संगीत के इस्तेमाल पर विचार था- “आदर्श स्थिति के अनुसार सिनेमा को संगीत की जरूरत नहीं होती, परंतु जीवन में अक्सर हमें आदर्श स्थितियाँ नहीं मिलतीं, इसलिए संगीत की जरूरत सिनेमा में बनी रहती है. संगीत, विशेषकर पार्श्वसंगीत की जरूरत इसलिए होती है क्योंकि पर्दे पर किसी दृश्य विशेष में दिखाए जाने वाले किसी विशिष्ट भाव को और प्रभावशाली बनाने में वह एक सहयोगपूर्ण भूमिका निभाता है.”¹ स्पष्ट है कि सिनेमा जैसी विधा हमारे जीवन की विविध स्थितियों का चित्रण एक निश्चित कालावधि में करता है तो ऐसे में हर एक दृश्यों, पात्रों के मनोभावों और वस्तुस्थिति के यथार्थपूर्ण चित्रण के लिए संगीत संयोजन की आवश्यकता पड़ती है जो दृश्यों के प्रभाव को दुगुना बढ़ा देता है.

चूँकि फ़िल्में अपने शुरुआती समय में श्वेत-श्याम वर्ण युक्त व ध्वनि रहित थीं. किन्तु मूक काल में भी दर्शकों को आकर्षित और मनोरंजित करने के लिए पर्दे के पीछे संगीतवादकों की एक टोली को रखा जाता था जो दृश्यों के हाव-भाव के अनुकूल संगीत देता था. भले ही संगीत का यह रूप फ़िल्म से पृथक् हो पर दर्शकों और फ़िल्मकारों के मानसपटल पर एक प्रश्न जरूर अंकित कर गया कि यदि फ़िल्में ध्वनि के साथ प्रदर्शित हो तो उसका प्रभाव जनमानस पर कितना पड़ेगा? फलतः सिनेमा अपने मूक युग से प्रस्थान कर सवाक् युग में प्रवेश करता है और हमारे समक्ष भारत की पहली बोलती फ़िल्म ‘आलम आरा’ इस प्रश्न के उत्तर के रूप में दिखलाई पड़ती है. यहाँ से भारतीय सिनेमा के सम्पूर्ण विकास की शुरुआत होती है जोकि धीरे-धीरे अपने विकास के सौ साल से अधिक का सफर और आजादी के 75 वें वर्ष में प्रवेश करता है.

फलतः सिनेमा में ध्वनि के आगमन से सिनेमाई अभिव्यक्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात होता है. पहले जिन संगीतवादकों की टोली को रखा जाता था, अब उनकी जगह अनुभवी शास्त्रीय गायकों ने ले ली. परिणास्वरूप सरोज के पुराने उस्ताद सखावत हुसैन खां और गायिका गौहर जान जैसी सरीखी हस्तियों ने भाग लेना शुरू किया. उसके बाद उस्ताद झंडे खां और तिमिर बरन जैसे शास्त्रीय संगीतकारों ने भी अपने हुनर से फ़िल्मी दुनिया को समृद्ध किया. कुलदीप कुमार लिखते हैं- “अक्सर यह भी होता था कि फ़िल्म के लिए दर्शक जुटाने की गरज से फ़िल्म शुरू होने से पहले या मध्यांतर में एक रंगारंग कार्यक्रम पेश किया जाता था जिसमें शास्त्रीय गायकों और वादकों समेत हर क्रिस्म के कलाकार भाग लिया करते थे. आज भी सरोद के पुराने उस्ताद सखावत हुसैन खां की एक इसी तरह की रिकॉर्डिंग मिलती है जिसमें उन्होंने एक ठुमरीनुमा चीज़ बजायी है और उनके साथ तबले पर अपने समय की चोटी की गायिका गौहर जान के साथ संगत करने वाले फ़ैयाज़ खान हैं. ये वही गौहर जान हैं जिनके 1902 में गाये जौनपुरी, जोगिया, गांधारी और सूर की मल्हार के रिकॉर्डों से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की रिकॉर्डिंग का इतिहास शुरू होता है. मूक फ़िल्मों के बाद सवाक् फ़िल्मों का दौर शुरू हुआ और फ़िल्मों में संगीत ने बाक्रायदा प्रवेश किया. शुरुआती दौर में संगीत देने वालों में उस्ताद झंडे खां और तिमिर बरन जैसे शुद्ध शास्त्रीय संगीतकार शामिल थे. इसलिए इस दौर की फ़िल्मों के संगीत पर शास्त्रीय संगीत का स्पष्ट प्रभाव नज़र आता है.”² स्पष्ट है कि भारतीय फ़िल्मों ने कैसे और किस प्रकार शास्त्रीय गायकों को आकर्षित किया और शास्त्रीय गायन द्वारा सिने जगत को समृद्ध किया, जिसका प्रभाव हमें कई निर्देशकों की फ़िल्मों में दिखता है. उनमें से एक हमारे महान निर्देशक सत्यजित राय की फ़िल्मों में भी दिखाई देता है जिन्होंने अपने फ़िल्मी करियर की शुरुआत ही विविध शास्त्रीय गायकों और वादकों के संगीत के प्रयोग से किया. उनकी फ़िल्मों में संगीत महान सितार वादक पंडित रविशंकर और सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां ने दिया. इसके साथ ही साथ सरोद वादक और मैहर घराने से तल्लुक रखने वाले शास्त्रीय संगीतज्ञ अली अकबर खान ने भी अपने संगीत से राय की फ़िल्मों को ऊँचाइयों तक पहुँचाया. विनोद दास लिखते हैं- “सत्यजीत राय की फ़िल्मकला में उनके संगीत और ध्वनि की अप्रतिम भूमिका रही है. पंडित रविशंकर,

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

अली अकबर खान और विलायत खान सरीखे प्रतिष्ठित शास्त्रीय संगीतज्ञों की सहचारिता से उन्होंने फ़िल्म-निर्माण में एक नई परंपरा का सूत्रपात किया.³ सत्यजित राय ने अपने फ़िल्मों में इन महान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीतज्ञों और वादकों के संगीत का प्रयोग कर जहाँ एक ओर भारतीय जनमानस में शास्त्रीय संगीत के प्रति सम्मान और रुचि के भाव का संचार किया वहीं दूसरी ओर पश्चिमी जगत को भी शास्त्रीय संगीत का दीवाना बना दिया. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सत्यजित राय के फ़िल्मों के कारण ही पश्चिमी दर्शक पहले पहल इस पारंपरिक भारतीय कला का रसास्वादन कर पाये क्योंकि राय की पहली फ़िल्म 'पाथेर पांचाली' की लोकप्रियता से दर्शक पहले ही मुग्ध थे और फिर इसमें भारत रत्न पण्डित रवि शंकर जैसे महान हस्तियों के विभिन्न राग-रागनियों और बंदिशों के प्रयोग ने दर्शक को आश्चर्यचकित कर दिया. हालाँकि राय की फ़िल्मों से पहले पंडित रवि शंकर भारतीय जन नाट्य संघ (इप्ता) की फ़िल्म 'धरती के लाल' और चेतन आनंद की फ़िल्म 'नीचा नगर' में संगीत दे चुके थे, जोकि उनके फ़िल्मों में संगीत देने के एक लम्बे तजुर्बे को रेखांकित करता है.

संगीत नाटक अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका 'संगना' में रविशंकर के सिनेमाई संगीत योगदान पर संगीत समीक्षक कुशल गोपालका अपने आलेख में लिखते हैं- "गाँधी" हो या 'गोदान', पंडित जी ने हर फ़िल्म की भूमिका और दायरा भांपकर उसकी आवश्यकता अनुसार संगीत की मात्रा और उसका जायका तय किया है. उनकी फ़िल्में रचनाओं में रागदारी संगीत के तत्वों का बोझ या स्वयं की विद्वत्ता जताने की लालसा नहीं है, इसलिए वह हर सुनने वाले को भाती है. उनकी हर रचना में कुछ नई बात या सीख मिलती है.⁴ स्पष्ट है कि पंडित जी को सिनेमा में संगीत देने का बहुत बड़ा तजुर्बा था. वे फ़िल्मों के कथानक और दृश्यों की माँग एवं पात्रों के हाव-भाव के अनुसार संगीत संयोजन करते थे. जैसा कि उन्होंने राय की चार फ़िल्मों- अपूर् त्रयी- 'पाथेर पांचाली', 'अपराजितो' और 'अपूर संसार' तथा 'पारस पत्थर' में कथानक के अनुसार अनेक प्रकार की बंदिशों और राग-रागनियों का प्रयोग किया है. जैसा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की महक और सौंदर्य राग-रागनियों में बसता है. बिना राग-रागनियों के किसी शास्त्रीय संगीत का संयोजन करना ही असंभव है. राय रागों को एक 'मंदिर' के रूप में मानते हुए उसके स्वरूप और प्रयोग पर कहते हैं- "राग एक मंदिर की तरह है, जिसमें सबसे पहले आधार, जिसके ऊपर एक ढाँचा (कुछ छोटे आकार का), उसके ऊपर कुछ नक्काशी (कुछ और छोटे आकार की) और फिर नुकीला शीर्ष. अर्थात् राग की शुरुआत एक धीमे आलाप से होती है, जिसके बाद वह समय के साथ-साथ रफ्तार पकड़ता है."⁵ अतः राय की फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत से जादू बिखरने वाले संगीतज्ञ भी राग का प्रयोग इसी तरह के ढाँचे और धीमे आलाप से करते हैं जो उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है.

पंडित रविशंकर राय की फ़िल्मों में संगीत संयोजन को बेहतर बनाने के लिए वाद्ययंत्रों के प्रयोग पर आपस में विचार-विमर्श करते दिखते हैं. वे राय के इस बात पर सहमति जताते हुए कि 'भारतीय वाद्ययंत्र को छोड़कर अन्य किसी पश्चिमी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं होगा'- सितार के अलावा अन्य तीन वाद्ययंत्रों- दिलरुबा (तारशहनाई), भीमराज और सरोद का प्रयोग किया. फिर आगे 'अपराजितो' में इन्हीं वाद्ययंत्रों को एकल या विभिन्न संयोजनों के साथ मिलाकर संगीत का निर्माण किया जबकि 'अपूर संसार' के लिए उन्हें कथानक के मूड और माँग के अनुसार वायलिन, सेलो और कहीं-कहीं पियानो का भी इस्तेमाल किया. अतः विभिन्न वाद्ययंत्रों के सम्मिश्रण से 'अपूर् त्रयी' का संगीत संयोजन तैयार हो पाया. इन वाद्ययंत्रों की अनुगूँज में पंडितजी की राग-रागनियों की अलग-अलग धुन दर्शकों को विभिन्न दृश्यों और पात्रों की भाव-भंगिमाओं में सुनाई देती है. जैसे- मानसून से पहले जीव-जन्तुओं के नृत्य के लिए राग देश, दुर्गा की मृत्यु के बाद राग तोड़ी, सर्वजया के दुःख के लिए राग पटदीप, हरिहर के मृत्यु के समय राग जोग और फिर गाँव में सर्वजया के अकेलेपन को व्यक्त करने के लिए भी राग जोग तथा अंत में अपु-अपर्णा के संबंध की अभिव्यक्ति के लिए राग लाचारी तोड़ी का प्रयोग दिखाई-सुनाई देता है. पंडित जी द्वारा राय

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

की फ़िल्मों में दिया गया संगीत आज भी दर्शकों को भावविभोर करती है, क्षणभर में मन-मस्तिष्क पर उन सभी छवियों की आकृति तैरने लगती है, जिसे दर्शक देख चुका है। कहने का अभिप्राय है कि यह संगीत 'अपू त्रयी' के लिए कालजयी और सिग्नेचर बन गया है। राय की कुछ फ़िल्में जो पंडित जी के दिल के बेहद करीब थी- 'पाथेर पांचाली', 'चारुलता', 'कंचनजंघा' और 'जलसा घर'। वे अपनी आत्मकथा 'राग माला' में इस बात का जिक्र करते हुए कहते भी हैं- "उन्होंने इतनी शानदार फ़िल्में बनाई: 'पाथेर पांचाली', 'चारुलता', 'कंचनजंघा' और 'जलसा घर' हमेशा मेरी याद में बसे रहेंगे।"⁶

इसके अलावा पंडितजी ने ऋषिकेश मुखर्जी की फ़िल्म 'अनुराधा', तपन सिंहा की फ़िल्म 'काबूलीवाला', गुलज़ार की फ़िल्म 'मीरा', हॉवर्ड वर्थ की फ़िल्म 'रागा' जो कि स्वयं पंडितजी के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र थी, आदि भारतीय सिनेमा में अपने संगीत का जादू बिखेरा।

पंडित रवि शंकर के अलावा आफताब-ए-सितार से सम्मानित सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां ने अपने सहयोगियों बेगम अख्तर और रोशन कुमारी के साथ मिलकर राय की संगीत प्रधान फ़िल्म 'जलसा घर' में अपने संगीत से दर्शकों को मनोरंजित किया। यहाँ राय ने सामंतवादी प्रथा के पतन और पूँजीवाद के उद्भव को विश्वंभर राय को केन्द्र में रखकर दिखाया है। यहाँ कैमरे पर (13:42 मिनट पे) बेगम अख्तर के गाए गीत की कशिश को महसूस किया जा सकता है और रोशन कुमारी के कथक की प्रस्तुति एक निश्चित फासले में होती है। फ़िल्म की शुरुआत राग तोड़ी से होती है और फिर बंसत मुखरी द्वारा विश्वंभर राय के दैनंदिन सुबह की निराशाजनक क्रियाओं को अभिव्यक्त किया जाता है। अंत में विलायत और इमरात खान की युगल संगीत के संयोजन से दक्षिण भारतीय राग का प्रयोग किया जाता है जिसका प्रयोग अब उत्तर भारतीय संगीत में होता है। राय ने युगल जोड़ी के संगीत को आश्चर्यचकित कर देने वाली 'उज्ज्वल ध्वनि' की संज्ञा दी है। 'जलसा घर' फ़िल्म में राय ने खुलकर विश्वंभर राय के जरिए संगीत का प्रयोग किया है। अमेरिकी आलोचक स्टेनली कॉफ़मैन लिखते हैं- 'द म्यूज़िक रूम' (जलसा घर) एक गहन रूप से महसूस की जाने वाली थकाऊ फ़िल्म है। एक ओर, इसकी पश्चिमी व्युत्पत्तियाँ पेटेंट हैं तो दूसरी ओर इसका मुख्य स्वदेशी तत्व- भारतीय संगीत हमारे कानों के लिए सहज और थकाऊ है।' विलायत खां ने 'जलसा घर' के अलावा साल 1969 में मर्चेट आइवरी प्रोडक्शंस में बनी फ़िल्म 'दि गुरू' और साल 1976 में एच.के. वर्मा द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'कादम्बरी' में भी अपने संगीत से दर्शकों को आनंदित किया है।

इसके अलावा प्रख्यात सरोद वादक अली अकबर खान ने राय की फ़िल्म 'देवी' में वाद्ययंत्रों के संयोजन से मधुर संगीत का निर्माण किया। इसे पहले वे चेतन आनंद की फ़िल्म 'आंधियां' में संगीत दे चुके थे। उस्ताद अली अकबर खान संगीत के विषय में कहते हैं- "संगीत, हम कहते हैं 'नाद ब्रह्म' - यह ईश्वर के सबसे नजदीक है। कोई ईश्वर या ध्वनि को नहीं देख सकता है, लेकिन जब वह ध्वनि आपकी आत्मा को छूती है, तो आपको कुछ महसूस होता है।"⁷ राय ने अली अकबर खान के इस फ़िल्मी संगीत के तजुर्बे का बखूबी इस्तेमाल किया है। अली अकबर खान ने राय की फ़िल्म 'देवी' में अपने पारंपरिक वाद्ययंत्रों और संगीत द्वारा कथानक के भावानुकूल संगीत प्रदान किया। उनके द्वारा दिया गया संगीत पात्रों के हाव-भाव और दृश्य की अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावकारी बनाती है। इसके अलावा अली अकबर खान ने मर्चेट आइवरी की 'हाउस होल्डर' (1963) और 'क्षुधित पाषाण' (1960) तथा बर्नार्डो बर्तोल्ची की 'लिटिल बुद्धा' (1993) में संगीत दिया है।

इसप्रकार सत्यजित राय ने 'पाथेर पांचाली', 'अपराजितो' और 'अपुर संसार' तथा 'पारस पत्थर' में पंडित रवि शंकर, 'जलसा घर' में उस्ताद विलायत खां और 'देवी' में उस्ताद अली अकबर खान आदि महान शास्त्रीय संगीताज्ञों के संगीत के प्रयोग से भारतीय शास्त्रीय संगीत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी। भारतीय दर्शक

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

से इतर विदेशी दर्शक भी भारतीय राग-रागनियों, विभिन्न पारंपरिक वाद्ययंत्रों और बंदिशों को जान पाए. राय ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय परंपरागत संगीत के प्रयोग से भी फ़िल्म को सफल बनाया जा सकता है.

हालाँकि 'देवी' फ़िल्म के बाद राय ने संगीत संयोजन का भार अपने कंधों पर ले लिया था क्योंकि इन महान उस्तादों के साथ काम करके उन्हें यह अनुभव हो गया था कि शास्त्रीय संगीतज्ञों के साथ काम करना थोड़ा कठिन है. एक तो उनके पास समय की व्यस्तता अधिक होती थी और दूसरी हर दृश्य के मनोभाव के अनुसार संगीत देने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था क्योंकि संगीतज्ञ राय की तरह फ़िल्म के आंतरिक चेतना से जुड़ नहीं पाते थे. विनोद दास लिखते हैं- "लेकिन इन प्रतिष्ठित शास्त्रीय संगीतज्ञों के पास समय की कमी और फ़िल्म कला की आंतरिक चेतना से उनके गहरे रूप से न जुड़ पाने के कारण सत्यजीत राय उनसे पूरी तरह संतुष्ट न थे. अंततः वे अपनी फ़िल्मों की संगीत रचना स्वयं करने लगे. परवर्ती काल में वे यहाँ तक कहने लगे थे कि दृश्यों के अंतरालों को भरने के लिए वे अपनी फ़िल्मों में संगीत का उपयोग करते हैं, अन्यथा संगीत के ज्यादा इस्तेमाल के खिलाफ हैं."⁸ अतः राय साल 1961 में आई फ़िल्म 'तीन कन्या' से खुद से ही संगीत संयोजन करने का कार्यभार उठाया. राय जितना शास्त्रीय संगीत के प्रति आस्थावान थे उतना ही पाश्चात्य संगीत में उनकी दीवानगी थी. जहाँ एक ओर वे भारतीय संगीत को 'प्राकृतिक' शब्द से विभूषित किया है वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य संगीत को 'मानवीय' माना है. उनके द्वारा 'तीन कन्या' के बाद दिए गए फ़िल्मों में भारतीय संगीत से लेकर पाश्चात्य संगीत की अनुगूँज सुनाई देती है. जितना वे अपने फ़िल्मों में कथानक को लेकर प्रयोगधर्मी दिखलाई देते हैं उतना ही अपने संगीत संयोजन में भी प्रयोगवादी नजर आते हैं.

इस प्रकार सत्यजित राय की फ़िल्मों को जहाँ एक ओर पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खान और विलायत खान जैसे प्रतिष्ठित शास्त्रीय संगीतज्ञों ने अपने वाद्ययंत्रों, बंदिशों, सुर लहरियों और राग-रागनियों की विविधता से 'पाथेर पांचाली', 'अपराजितो', 'अपुर संसार', 'पारस पत्थर', तथा 'जलसा घर' आदि फ़िल्मों को शीर्ष फलक पर पहुँचाया तो वहीं दूसरी ओर राय ने इन हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीतज्ञों को विश्वस्तर पर एक नई पहचान दिलाई.

संदर्भ सूची:

¹ जोशी, संदीप, जयसिंह (संप.), सत्यजित राय : जीवन और कला के अनुभव, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ. 40

² प्रसाद, मुरली मनोहर (संप.), नया पथ, सिनेमा विशेषांक, नई दिल्ली, जनवरी-जून (संयुक्तांक), 2013, पृष्ठ. 304

³ दास, विनोद, भारतीय सिनेमा का अंतःकरण, मेधा बुक्स, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ. 32-33

⁴ https://hindi.webdunia.com/hindi-books-review/pt-ravi-shankar-music-book-review-about-ravi-shankar-121091200046_1.html

⁵ जोशी, संदीप, जयसिंह (संप.), सत्यजित राय : जीवन और कला के अनुभव, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ. 40

⁶ <https://frontline.thehindu.com/cover-story/working-with-ravi-shankar-the-music-of-satyajit-ray-apu-trilogy/article37065677.ece>

⁷ <https://www.news9live.com/art-culture/music/traversing-100-years-of-ali-akbar-khans-towering-musical-legacy-164670?infinite-scroll=1>

⁸ दास, विनोद, भारतीय सिनेमा का अंतःकरण, मेधा बुक्स, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ. 32-33